1. युआन शीह काई और गणराज्य

युआन शीह काई का परिचय—मंचू राजवंश के समाप्त होते ही युआन शीह काई ने सत्ता सँभाल ली और चीन में गणराज्य की घोषणा कर दी। 13 फरवरी, 1912 को सनयात सेन ने अपने वायदे के अनुसार क्रान्तिकारी सरकार के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया और अगले दिन क्रान्तिकारी सभा ने युआन शीह काई को अध्यक्ष चुन लिया।

युआन शीह काई का जन्म 1859 ई० में होनान के एक संभ्रान्त परिवार में हुआ था। उसकी शिक्षा-दीक्षा अच्छी हुई थी। 1887 ई० में वह विशेष प्रतिनिधि नियुक्त कर कोरिया भेजा गया था। उसने कोरिया में अपना उत्तरदायित्व भली तरह निभाया और उस देश पर चीन की सार्वभौम सत्ता बनाए रखने की पूरी चेष्टा की। जब 1894 ई० में चीन-जापान युद्ध छिड़ा तो वह कोरिया से वापस आ गया। आते ही उसे ली हुंग चांग की सेना को संगठित करने का भार सौंपा गया और इस कार्य को उसने बड़ी निपुणता के साथ सम्पन्न किया। 1898 ई० में 'सौ दिनों के सुधारकाल' में मंचू-सम्राट् ने युआन जैसे योग्य एवं महत्त्वकांक्षी व्यक्ति को अपने पक्ष में करने का निश्चय किया और उसे चिहली प्रान्त का वायसराय नियुक्त कर दिया। कुछ दिनों बाद सम्राट् ने उसे राजमाता त्जु शी को कैद करने का आदेश दिया। युआन इस अभियान पर निकला अवश्य, लेकिन उसने सम्राट् के साथ विश्वासघात किया और राजमाता का ही पक्ष लेकर सम्राट् को कैद करने में उसकी मदद कर दी। इसके उपरान्त वह सम्राज्ञी का सबसे बड़ा कृपापात्र बन गया। कुछ दिनों में वह चीन का सर्वाधिक शक्तिशाली एवं महत्त्वपूर्ण व्यक्ति बन गया। बॉक्सर विद्रोह के काल में विदेशियों के अनुरोध पर उसे शान्तुंग का सूबेदार नियुक्त किया गया, जहाँ उसने विद्रोह पूरी तरह कुचल दिया। इसके बाद उसकी प्रसिद्धि बहुत बढ़ गई। विद्रोह की समाप्ति पर जब सम्राज्ञी ने सुधारों का कार्यक्रम अपनाया तो युआन शीह काई सम्राज्ञी का प्रमुख सलाहकार और सहयोगी बना। लेकिन, राजनीतिक विचारों में वह बड़ा ही प्रतिक्रियावादी था। उसका दृष्टिकोण अत्यन्त संकुचित था और अपने नवीनतम विचारों के बावजूद वह परम्पराओं से जकड़ा रहनेवाला आदमी था। लोकतंत्र में उसे कतई विश्वास नहीं था और 1911 ई० में उसे इस बात पर भी भरोसा नहीं था कि चीन के रोगों का उपचार किसी तरह लोकतंत्र भी हो सकता है। युआन की धारणा थी कि अतीत की राजनीतिक प्रणाली अथवा भावना से बिलकुल सम्बन्ध तोड़ लेने का प्रयत्न चीन के लिए आत्मघाती होगा। वह पूरी तरह एक अवसरवादी राजनीतिज्ञ था, लेकिन सैनिक मामलों में अपने जमाने का उत्तम प्रशासक था। उसने आधुनिक ढंग से चीनी सेना का संगठन किया। 1901 ई० में वह चिहली प्रान्त का वायसराय नियुक्त हुआ। यहाँ उसने आधुनिक ढंग से एक विशाल सेना का संगठन किया। इस सेना के साथ-साथ युआन की शक्ति और प्रतिष्ठा में बड़ी वृद्धि हुई और वह राज्य का सर्वप्रधान व्यक्ति बन गया।

1902 ई० में सम्राज्ञी की मृत्यु के बाद युआन शीह काई के दिन खराब हो गए और उसे राजकार्य से अलग कर दिया गया। किन्तु, शताब्दी के प्रथम दशक के अन्त में जब मंचू-शासन पर आफतों के बादल मँडराने लगे, तब युआन के महत्त्व को मंचुओं ने फिर समझा और उसे चीन का प्रधान सेनापति बना दिया। बाद में जब क्रान्ति शुरू हुई तो मंचू-राजा ने उसे प्रधानमंत्री बना लिया। इस प्रकार, युआन शीह काई अपनी सफलता की चरम सीमा पर पहुँच गया। 1912 ई० में वह चीनी गणराज्य का राष्ट्रपति भी बन गया।

युआन शीह काई की समस्याएँ—चीनी गणराज्य के अध्यक्ष के रूप में युआन शीह काई को भीषण राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ा। प्रारम्भिक क्रान्तिकारियों ने कभी भी युआन पर भरोसा नहीं किया था; उसके साथ उन्होंने शुरू में जो समझौता करने का प्रयास किया था, उसका मुख्य कारण यह था कि युआन उस समय चीन का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति था और उसके पास एक विशाल सेना थी। वह यह नहीं मानता था कि जनता ने उसे गणतंत्र का अध्यक्ष बनाया। उसे यह पद राजाज्ञा से

से मिला था और इस कारण वह इस पद पर अपना कानूनी अधिकार मानता था। इसलिए वह अध्यक्ष पद को सर्वशक्तिमान बनाना चाहता था। लेकिन, इसके विपरीत क्रान्तिकारी नेता राष्ट्रीय विधानसभा को वास्तविक शक्ति देना चाहते थे। वे चीन की राजधानी नानकिंग में रखना चाहते थे, जबकि युआन पिकिंग में ही राजधानी रखना चाहता था। पिकिंग से उसे कई लाभ थे। उसकी सारी सेना पिकिंग में स्थित थी और वहाँ उसे विदेशी दूतावासों से भी सहायता पाने का भरोसा था। फलतः, आरम्भ से ही युआन शीह काई और क्रान्तिकारियों के बीच मतभेद शुरू हुआ, जो उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया।

युआन के समक्ष कई तरह की प्रशासनिक समस्याएँ भी उठ खड़ी हुईं। क्रान्ति के काल में सम्पूर्ण देश में अराजकता फैल गई थी। कई प्रान्तों पर से केंद्र की हुकूमत उठ गई थी और प्रान्तीय सूबेदार स्वतंत्र हो गए थे। उन्होंने अपनी अलग-अलग सेनाएँ संगठित कर ली थीं और केन्द्र के आदेशों की अवहेलना शुरू कर दी थी। शान्ति और सुव्यवस्था का नामोनिशान मिट गया था।

आर्थिक व्यवस्था भी निरन्तर खराब होती जा रही थी। खजाना खाली पड़ा था और आमदनी के सभी स्रोतों पर विदेशियों का आधिपत्य था। अकाल और अनावृष्टि के कारण जनता की हालत अत्यन्त खराब थी और इस कारण उस पर कर भी नहीं लगाया जा सकता था। आर्थिक संकट दूर करने के लिए युआन शीह काई ने विदेशों से ऋण लेने की सोची। 26 अप्रिल, 1913 को उसने जापान, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस और संयुक्त राज्य अमेरिका से 12,50,00,000 डालर का ऋण भी प्राप्त कर लिया। लेकिन, संसद के दोनों सदनों ने विदेशी ऋण लेने की मनाही की। जनता में भी इसे लेकर खलबली मच गई। विशेष तौर पर यांगत्सी की घाटी में विद्रोह फैल गया।

विरोधियों का विनाश—इस परिस्थिति में युआन शीह काई ने अपने सभी विरोधियों को खत्म करने का संकल्प किया। अगस्त, 1912 में संसद के सदनों के चुनाव की तैयारी होने लगी। सनयात सेन और उसके साथियों ने थुंग मेंग हुइ को अन्य गणतन्त्रीय दलों से मिलाकर एक नए राष्ट्रवादी दल कुओमिनतांग की स्थापना की। दिसम्बर में चुनाव हुए। कुओमिनतांग दल को निचले सदन में 596 में से 269 स्थान तथा द्वितीय सदन में 274 में से 122 स्थान मिले। किन्तु, मतदान में काफी घपला हुआ। 20 मार्च, 1913 को अध्यक्ष युआन शीह काई के इशारे पर गणतंत्रीय नेता सुंग चिआओ-रन को शंघाई रेलवे स्टेशन पर मार डाला गया; क्योंकि वह इस बात की माँग कर रहा था कि संसद में बहुमत प्राप्त दल को मन्त्रिमण्डल बनाने का अधिकार होना चाहिए। इस हत्या से संसद और अध्यक्ष का सम्बन्ध अत्यन्त तनावपूर्ण हो गया।

आतंक के राज्य की स्थापना—इसी समय युआन शीह काई ने विदेशी कर्ज लेने का फैसला किया और नमक-कर को बन्धक रखकर विदेशों से ऋण प्राप्त कर लिया। संसद और कुओमिनतांग ने इसका प्रबल विरोध किया। लेकिन, युआन को इस कर्ज से बड़ा लाभ था। वह इसके सहारे अपनी स्थिति सुदृढ़ बनाना चाहता था। 2 जुलाई, 1913 को सनयात सेन ने एक तार द्वारा युआन शीह काई से इस्तीफे की माँग की। इसके जबाव में युआन ने उसे रेलवे विभाग के संचालक के पद से हटा दिया। 14 जुलाई को नानकिंग के लोगों ने अपने को युआन सरकार से स्वतंत्र घोषित कर दिया। पाँच और प्रान्तों के लोगों ने उनके साथ मिलने का ऐलान कर दिया। किन्तु, युआन ने जल्द ही उनके खिलाफ कदम उठाया। अगस्त तक विद्रोही परास्त हो गए। उनके नेता भाग गए। 8 अगस्त, 1913 को सनयात सेन को पुनः देश छोड़कर भागना पड़ा। उसने जापान में शरण ली।

संसद की समाप्ति—विद्रोहों का निर्दयतापूर्वक दमन करने के बाद युआन शीह काई ने अपनी स्थिति सुदृढ़ करने की दिशा में कदम उठाए। उसने सम्पूर्ण देश में अपना आतंक कायम कर लिया और विरोधियों की हत्याएँ की जाने लगीं। इसके लिए उसने भ्रष्ट साधनों का भी सहारा लिया। डरा-धमकाकर और घूस देकर उसने संसद के सदस्यों को अपने पक्ष में किया और अपने को पाँच वर्ष की अवधि के लिए गणराज्य का अध्यक्ष निर्वाचित करा लिया। 10 अक्टूबर, 1913 को उसने इस पद की शपथ ग्रहण कर ली। उसने अब अपनी सैनिक शक्ति बढ़ा ली और प्रमुख स्थानों पर अपने आदमियों को बहाल कर लिया। इसके उपरान्त उसने कुओमिनतांग दल को अवैध घोषित कर दिया। इससे संसद के कुओमिनतांग दल के सदस्यों का निर्वाचन निरस्त हो गया। इस कारण, संसद से बहुत-से सदस्यों को हट जाना पड़ा और उस दल की शक्ति समाप्तप्राय हो गई। फिर भी, संसद ने एक संविधान बनाया जिसमें अध्यक्ष के अधिकारों में कमी करने का प्रस्ताव था। 26 अक्टूबर, 1913 को यह मसविदा स्वीकार भी कर लिया गया। इस पर जनवरी, 1914 में युआन ने संसद को ही भंग कर दिया और एक नई समिति का निर्माण किया, जिसका नाम सांविधानिक समिति रखा गया। इसके सदस्यों को उसने स्वयं मनोनीत किया। 10 मार्च को उसने एक

आदेश निकालकर प्रान्तीय विधानसभा को भी तोड़ दिया।

युआन शीह काई का अधिनायकत्व—विरोधियों का पूर्णतया दमन करने के उपरान्त युआन ने अपने इच्छानुसार संविधान बनाया। इसके अनुसार राष्ट्रपति का कार्यकाल दस वर्ष का रखा गया, लेकिन इस अवधि को वह अपने इच्छानुसार बढ़ा सकता था। संसद के स्थान पर छप्पन सदस्यों की एक विधानसभा बनाई गई, जिन्हें मनोनीत करने का अधिकार राष्ट्रपति को मिला। प्रशासन के सभी विभागों के अध्यक्ष को मनोनीत करने का अधिकार भी युआन को ही प्राप्त हुआ। वे सब पदाधिकारी केवल उसके प्रति उत्तरदायी थे। इस प्रकार, राज्य की सारी शक्ति राष्ट्रपति के हाथ केन्द्रित हो गई। मार्च, 1914 में इस नवीन संविधान की घोषणा कर युआन ने अपना स्वेच्छाचारी शासन कायम कर लिया। विरोधियों का क्रूरतापूर्वक दमन किया गया। लोगों के इकट्ठा होने और स्वतंत्र रूप से विचार व्यक्त करने पर कड़ी पाबन्दी लगा दी गई। अखबारों पर तरह-तरह के प्रतिबन्ध लगा दिए गए। देश में एक बार फिर से मंचूकालीन निरंकुशता का वातावरण उपस्थित हो गया। युआन शीह काई को राज्य के पूरे अधिकार मिल गए। नाम को छोड़कर वह हर दृष्टि से राजा बन गया। गणराज्य का गला उसके जन्म के समय ही घोंट दिया गया।

युआन शीह काई की विदेश नीति—मंचू राजवंश से चीनी गणराज्य का परिवर्तनकाल विभिन्न विद्रोहों और स्वतंत्रता आन्दोलन का अवसर था। यह आन्दोलन मंगोलिया और तिब्बत में भी चला। गणतंत्र की स्थापना के शीघ्र बाद मंगोलिया में अशान्ति शुरू हुई और वहाँ स्वतंत्र मंगोलिया सरकार स्थापित होने की घोषणा हो गई। कुछ समय से कई कारणों से वहाँ चीनी शासन के विरुद्ध असन्तोष बढ़ रहा था। इसके साथ ही, वहाँ रूसी षड्यंत्र भी पनप रहा था। रूस नहीं चाहता था कि चीन उत्तर की ओर बढ़े। इस हालत में 1 दिसम्बर, 1911 को चीनी अधिकारियों को मंगोलिया से हटने पर बाध्य होना पड़ा और उरगा में स्वतंत्र मंगोलिया सरकार की स्थापना हो गई। 1912 ई॰ में चीन ने फिर से अपनी सत्ता मंगोलिया में जमाने की कोशिश की और भीतरी मंगोलिया में उसे आंशिक सफलता भी मिली। किन्तु, नवम्बर में रूस ने उरगा शासन को मान्यता दे दी और उससे सन्धि कर ली। फिर, रूस तथा चीन और चीन तथा मंगोलिया के बीच स्थिति की स्पष्ट व्याख्या के लिए समझौता वार्ताएँ चलीं। 15 नवम्बर, 1913 को रूस और चीन के बीच एक सन्धि हो गई, जिसके अनुसार बाह्य मंगोलिया पर चीन का प्रभुत्व स्वीकार कर लिया गया। पर, आन्तरिक मामलों में उसे स्वायत्ता दी गई।

इसी समय तिब्बत में भी चीनी सत्ता के विरुद्ध विद्रोह हो गया। क्रान्ति के समय लासा स्थित चीनी फौज ने विद्रोह कर दिया और इतनी अति कर दी कि तिब्बतियों ने भी चीनियों को अपने देश से खदेड़ दिया। जनवरी, 1913 में तिब्बत ने एक स्वतंत्र देश के रूप में नई एवं स्वतंत्र मंगोल-सरकार के साथ एक समझौता सम्पन्न किया। युआन शीह काई ने तिब्बत पर फिर से चीन की सत्ता स्थापित करने का यत्न किया। किन्तु, ब्रिटेन ने इस बात का विरोध किया कि सैनिक शक्ति के प्रयोग से चीन वहाँ फिर से अपना नियंत्रण स्थापित करे। 1913 ई॰ में इस सम्बन्ध में समझौते की वार्ता चलती रही। 1914 ई॰ में तिब्बत, चीन और ब्रिटेन के बीच इस प्रश्न पर एक समझौता हो गया, जिसके अन्तर्गत पश्चिमी तिब्बत को स्वशासी मान लिया गया और पूर्वी तिब्बत में चीनी सत्ता स्वीकार कर ली गई। लासा में चीन को एक प्रतिनिधि तथा सेना रखने की सुविधा दी गई। किन्तु, चीन ने इस समझौते की पुष्टि कभी नहीं की। वस्तुतः, तिब्बत सम्बन्धी ब्रिटेन की कार्यवाही उतनी ही व्याकुलता का कारण बनी जितनी कि मंगोलिया के सम्बन्ध में रूसी साजिशें सिद्ध हुईं।

चीन और प्रथम विश्वयुद्ध—जुलाई,1914 में यूरोप में युद्ध छिड़ने से पिकिंग को गहरी चिन्ता हो गई। युआन शीह काई ने विचार किया कि अपने प्रदेश और समुद्र को संघर्ष से दूर रखने में ही चीन का हित साधन हो सकता है। अतएव, उसने चीन को तटस्थ देश घोषित कर दिया और अन्य देशों से अपील की कि वे चीन की तटस्थता मान लें। किन्तु, जर्मनी को छोड़कर किसी देश ने चीन के इस रवैये का स्वागत नहीं किया। जापान ने तो इस परिस्थिति से पूरा-पूरा लाभ उठाने का निश्चय किया। यूरोप के सारे देश युद्ध में फँसे हुए थे। अतः, चीन के क्षेत्र में जापानी साम्राज्य के प्रसार का यह बहुमूल्य अवसर था। चीन का वह भूभाग जो क्याऊ चाऊ कहलाता था, जर्मनी के अधिकार में था। अतएव, जापान ने जर्मनी के समक्ष यह माँग रखी कि क्याऊ चाऊ के प्रदेश पर से वह अपना आधिपत्य उठा ले और उसे जापान के हवाले कर दे, ताकि वह अन्ततः चीन को वापस किया जा सके। जब जर्मनी से इसका कोई उत्तर नहीं मिला तो जापान ने सैनिक कार्यवाही शुरू कर दी। चीन ने अपना विरोध प्रकट किया। इस विरोध के साथ-साथ उसने युद्ध के लिए क्याऊ चाऊ के निकटवर्ती क्षेत्रों को युद्धक्षेत्र के रूप में सीमांकित करने की

घोषणा कर दी। जापान ने तुरन्त ही युद्धक्षेत्र को अस्वीकृत कर दिया और इस प्रकार एक बार फिर स्पष्ट हो गया कि चीन न तो युद्ध को अपनी सीमाओं से दूर रख सकता है और न अपनी सीमाओं में युद्धरेखा पर नियंत्रण कर सकता है। 10 नवम्बर, 1914 को जापान ने क्याऊ चाऊ पर अधिकार कर लिया। चीनी क्षेत्र में जर्मनों का पूरा सफाया हो गया और जापानी वहाँ हावी हो गए।

इक्कीस माँगें—इस विजय से जापान का उत्साह और बढ़ा और उसने अपना साम्राज्यवादी पंजा सारे देश पर फैलाने का यत्न किया। चीन में एकता का अभाव था और सर्वत्र अराजकता एवं अव्यवस्था फैली हुई थी। यूरोपीय देश अपनी जिन्दगी और मौत की लड़ाई में उलझे हुए थे। इस अवसर से लाभ उठाने का निश्चय कर जापान ने चीन के सम्मुख और अपनी इक्कीस माँगें रखी (देखिए पृष्ठ 93)। यदि चीन इन माँगों को मान लेता तो वह पूरी तरह जापान का सरंक्षित राज्य हो जाता। इसलिए चीन में इसके विरुद्ध तीव्र प्रतिक्रिया हुई। सम्पूर्ण देश में जापान के विरुद्ध व्यापक आक्रोश उत्पन्न हो गया और जापानी दबाव के प्रतिरोध के लिए राष्ट्रपति के समर्थन में भारी जनमत तैयार हो गया। राष्ट्रपति का समर्थन अनेकों रूपों में प्रकट हुआ। राष्ट्रीय संस्थाओं का संगठन हुआ, देश की रक्षा के लिए सामान्य जनता में उदारतापूर्वक धनसंग्रह हुआ और जो लोग युआन शीह काई का विरोध कर रहे थे, उन्होंने उसके प्रति निष्ठा व्यक्त की। युआन ने इसे देश में अपनी व्यक्तिगत शक्ति का प्रतीक माना, जबकि वस्तुतः यह बढ़ती हुई राष्ट्रीयता की भावना की अभिव्यक्ति थी जो देश की स्वतंत्रता और क्षेत्रीय अविच्छिन्नता पर अभी तक हुए आक्रमण में सबसे भयंकर आक्रमण के प्रतिरोध में जागरित हुई थी।

नए राजवंश की स्थापना का प्रयास—मई, 1914 ई० में युआन शिह काई ने चीन के लिए जो संविधान बनवाया था, उसके अनुसार वह नाम को छोड़कर हर दृष्टि से राजा बन गया था। पर, उसकी आकांक्षाओं का ठिकाना न था। वह चीन में पुनः राजतंत्र स्थापित कर स्वयं मंचू सम्राटों का उत्तराधिकारी बनना चाहता था। उसके मित्र, परिवार के लोग और सलाहकार उसे गद्दी पर बैठने को उकसाते थे। एक अमेरिकी विधिविशेषज्ञ फ्रैंक जे० गुडनो उसे बराबर यही परामर्श दिया करता था। उसने चीन के लिए उपयुक्त शासन प्रणाली के सम्बन्ध में अपना मत प्रकट करते हुए कहा था कि "चीन के लिए गणतंत्र से अधिक उपयुक्त राजतंत्र है। चीन की स्वाधीनता कायम रखने के लिए वैधानिक शासन आवश्यक है और इस समय चीन की आन्तरिक परिस्थितियों तथा विदेशों से उसके सम्बन्धों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि वैधानिक शासन की स्थापना राजतंत्र द्वारा गणतंत्र के मुकाबले जल्द की जा सकती है।" किन्तु, इस परिवर्तन के पूर्व तीन शर्तें पूरी होने का सुझाव गुडनो ने रखा था— पहली शर्त थी कि उत्तराधिकारी का समुचित प्रबन्ध कर दिया जाए, दूसरी थी कि जनता इस परिवर्तन को स्वीकार कर ले और विदेशी शक्तियाँ इसका विरोध न करें और तीसरी शर्त थी कि चीन में वैधानिकता के उत्तरोत्तर विकास की समुचित व्यवस्था की जाए। ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस और रूस भी उसे सम्राट् के रूप में मान्यता देने को तैयार थे यदि वह चीन की ओर से जर्मनी के विरुद्ध युद्ध उद्घोषित करने को तैयार हो जाए। किन्तु, जापान इसके खिलाफ था। जापानी नेताओं का विचार था कि युआन का सम्राट् बनना जापान के हित में अच्छा नहीं रहेगा। अतएव, जापानी शासकों ने युआन को सूचित किया कि यदि वह सम्राट् बनने की कोशिश करेगा तो दक्षिण चीन में विद्रोह हो जाएगा।

किन्तु, राष्ट्रपति युआन राजतन्त्र स्थापित करने का फैसला कर चुका था, यद्यपि उसका यह निश्चय गुप्त था, ताकि दिखावे में ऐसा लगे कि जनमत के दबाव में आकर ही उसने ऐसा किया है। दिसम्बर, 1915 में उसने पिकिंग में जनता के 1,834 प्रतिनिधियों का—जो वस्तुतः उसकी मर्जी के आदमी थे—एक सम्मेलन बुलवाया, ताकि उसके राजगद्दी पर बैठने का समर्थन किया जाए। इन पिट्ठुओं और चापलूसों ने एक स्वर से प्रस्ताव का समर्थन किया और युआन से तीन बार राजा बनने और एक नया राजवंश चलाने की प्रार्थना की। 19 फरवरी, 1916 की तिथि युआन के राज्याभिषेक के लिए निश्चित हो गई।

युआन के राज्याभिषेक का व्यापक विरोध—लेकिन, सम्पूर्ण चीन में इस प्रस्ताव का घोर विरोध होने लगा। जापान में सनयात सेन ने क्रान्तिकारी दल का संगठन किया। चीन में इसकी अनेक गुप्त शाखाएँ खुल गईं। उसने चीन में राजतंत्र कायम करने की योजना का खुला विरोध किया और एक प्रपत्र जारी किया जो करोड़ों की संख्या में देशभर में बाँटा गया और जिसने काफी खलबली पैदा कर दी। युआन को प्रान्तों के सेनापतियों के समर्थन पर काफी भरोसा था। लेकिन, वे उसके सम्राट् बनने के खिलाफ हो गए; क्योंकि उन्हें खतरा था कि इससे उनकी स्थिति में फर्क पड़ जाएगा; क्योंकि उनके विचारों में नए साम्राज्य की शक्ति गणतंत्र के मुकाबले अधिक होने की सम्भावना थी। इसी समय विदेशियों ने चीन को हड़पने की नीति अपनाई।

ब्रिटेन की मदद से तिब्बत और रूस की मदद से बाहा मंगोलिया चीनी नियंत्रण से मुक्त हो गए। इसी समय जापान ने भी चीन के समक्ष इक्कीस माँगें (देखिए पृष्ठ 93a) रखीं। इन सब घटनाओं का असर यह हुआ कि चीनी जनता में युआन की लोकप्रियता घट गई और लोग उसके विरुद्ध हो गए।

दक्षिणी चीन में उपद्रव—जब राज्याभिषेक की तैयारियाँ हो रही थीं, उसी समय सुदूर दक्षिण-पश्चिम में विद्रोह हो गया। 23 दिसम्बर से यूनान प्रान्त से एक स्मृतिपत्र राष्ट्रपति के पास भेजा गया। इसमें राजतंत्र की स्थापना का विरोध किया गया। जब इस माँग पर ध्यान नहीं दिया गया तो वहाँ विद्रोह का झण्डा उठ खड़ा हुआ। युआन ने विद्रोह कुचलने के लिए सेना भेजी। यद्यपि सैनिक दृष्टि से सरकार को कई सफलताएँ मिलीं, लेकिन विद्रोह दबाया न जा सका और एक के बाद एक प्रान्त पीकिंग से स्वतंत्र होने की घोषणा करते गए। शुरू में क्रान्तिकारियों ने माँग की कि राजतंत्र समाप्त हो, नानकिंग-संविधान आधारभूत कानून के रूप में लागू हो और 1913 ई० की संसद फिर से गठित हो।

इस विरोध और उत्तरी प्रान्तों में स्वयं उसके अनुयायियों के फूट जाने से युआन शीह काई को अपना सारा मनसूबा छोड़ना पड़ा। उसने कहा कि मुझे गलत सूचना दी गई थी कि जनता मेरे सिंहासनारूढ़ होने के पक्ष में है। 22 मार्च को उसने सम्राट् बनने के विचार के परित्याग की घोषणा कर दी। राष्ट्रपति के इस कमजोरी के प्रकट होते ही गणतन्त्रवादियों ने अपनी माँग बढ़ाकर यह माँगना शुरू कर दिया कि युआन चीनी राजनीति से बिलकुल हट जाए। कुछ समय तक युआन ने इस माँग पर विचार करने से भी इनकार कर दिया। उस उधेड़बुन में मई में मध्य और दक्षिणी चीन के आठ प्रान्तों के लोगों ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। 12 मई को उनके प्रतिनिधियों ने कैण्टन में गणतन्त्रीय सरकार बना ली और ली युआन-हुंग को उसका अध्यक्ष नियुक्त कर दिया। इस हालत में युआन शीह काई को पूरी तरह झुकना पड़ा। उसने सभी पदों को छोड़ना स्वीकार कर लिया और युआन-हुंग को अपने उत्तराधिकारी के रूप में प्रस्तुत कर दिया। यह समझौता होने ही वाला था कि 6 जून, 1916 को युआन शीह काई की मृत्यु हो गई और सारा विवाद अकस्मात समाप्त हो गया।

युआन शीह काई का मूल्यांकन—युआन शीह काई की गणना चीन के एक स्वेच्छाचारी शासक के रूप में की जाती है। आधुनिक चीन के इतिहास में वह एक धूमकेतु की तरह आया और चला गया। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम और बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में चीन के शासन पर उसका जबरदस्त प्रभाव पड़ा। ली हुंग चांग की मृत्यु (1901 ई०) के बाद वह चीन का सर्वश्रेष्ठ प्रशासक माना जाता था। वह वैधानिक राजतंत्र का समर्थक और आधुनिक विचारों को पसन्द करनेवाला था। सम्राज्ञी के निर्देश पर चीन में जो सुधार की योजनाएँ अपनाई गई थीं, उनमें उसने महत्त्वपूर्ण हाथ बँटाया और सेना का संगठन आधुनिक ढंग से किया। सम्राज्ञी के मरणोपरान्त जब उसे शासन से हटना पड़ा तो ऐसा लगा मानो शासन का स्तम्भ ही हट गया हो। 1911 ई० में जब चीन में क्रान्ति का विस्फोट हुआ तो मंचू राजवंश ने उसे अपना एकमात्र संरक्षक माना। क्रान्तिकारियों को दबाने में युआन को काफी सफलता भी मिली। क्रान्तिकारी उसकी योग्यता से परिचित थे और इसलिए उन्होंने उसे चीनी गणराज्य का प्रधान बनाया। ऐसे समय यदि युआन जनता की भावना का आदर करता, गणतंत्र का पक्ष लेता तो वह चीन का एक महत्तम व्यक्ति हो सकता था। लेकिन, इतिहास ने उसे जो अवसर दिया, उससे वह लाभ नहीं उठा सका; क्योंकि वह राजतंत्र का समर्थक और घोर प्रतिक्रियावादी था। इस हालत में उसके समर्थक भी उसके विरोधी हो गए और उसे सत्ता का परित्याग करना पड़ा। चीन के इतिहास में वह घृणा का पात्र बन गया। 1916 ई० में उसकी मृत्यु ने उसके गौरवपूर्ण जीवन का गौरवहीन अन्त कर दिया।